

International Conference  
On  
**Bharat Rejuvenation**

(From Glorious Past to Modern Era)

**भारत नवोन्मेष**

(वैभवशाली अतीत से आधुनिक अभ्युदय तक)



Hosted by:

**Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, C. G.**

in association with:



**Bhartiya Shikshan Mandal**

**15<sup>th</sup> – 17<sup>th</sup> October, 2017**

**In Collaboration with**



## Theme of the Conference

Bharat, where the ray of civilization first dawned upon is the country of boundless spirits and the profound thoughtfulness. The eternal thinking first revealed itself in full glory and the stream of Indian thoughts has flowed crossing over the obstacles of space and time and still flowing into other nations of globe. The great achievements and discoveries of ancient Bharatiya in the fields of science, mathematics, economics, language, culture, arts, music, architecture, mineralogy, surgery, astrology, ayurveda, yoga and philosophy enlightened the humanity across the world. The shiny glory of Bharat was wrapped over by the dark ages of slavery under invaders and colonial rule over the long period of time. As fire remains intact under cover of ashes, so ancestral fire still remains latent in modern Indians and it is the time to rejuvenate that internal intellect of Bharatiya. Swami Vivekanand pointed out Kathopanishad saying “Arise, awake and approach till the goal is achieved” to enthuse Bhartiya. To remove the ashes of ignorance of glory, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya in association with Bhartiya Shiksha Mandal is organizing a three days International Conference of researchers and intellectuals to unravel various aspects of rejuvenation of Bharat.

It is the Bharat which recognizes the entire nature as a single entity and right to life for all living being. The deep thinking of Bhartiya established the concept of global village ‘Vasudhaiva kutumbakam’, concept of democracy “Munde munde matir bhinna”, concept of coexistence ‘Sarve bhawantu sukhinah’, concept of cooperation, ‘Sah viryam karvavahe’, concept of sustainable development, ‘Tain tyakten bhungjitha’, concept of supremacy of truth ‘Satyamev jayate’, concept of peace not only for human but for whole universe, ‘Antariksha Shanti, ausadhayo shanti’ and many many more great ideas for humanity. The Bharat is land of great sages who enlightened the path of mankind not only in Bharat but all over the globe. Bharat is the origin of great religions of world and also influenced the ideology of other religions. It is time to think that why Bharat has lost its glorious past. The root cause of the diminution is the long period of slavery that adversely affected our inherent intellect, social order and harmony and pushed the society in darkness of ignorance.

In spite of being invaded many times and ruled by foreigners, ripped off its wealthy glory, faced the partition and even after several problems, standing firmly and rising high and high is the nation ‘Bharat’. We have great achievements after getting our independence. It is the largest democracy as well as world’s largest and oldest continuous civilization. Despite vast diversity in Bharat, it always stood single and consolidated as one nation with high spirit and patriotic feeling. Science and Technology have always been an integral part of Indian culture. Bharat is one of the four largest military powers in the world today with nuclear power capabilities. Science and Technology of Bharat is growing with a pace as is evident from various space programs including Lunar and Mars mission, GSLV-MK-III, PSLV by lifting off 104 satellites together, and is on way to commercially launch satellites of developed nations at very low cost. Indian software skill and industry has proven intellectual power all over the world. Today Bharat is fastest growing economy and has self sufficiency in food production and export of various food grains with the launch of “Make in India” the country is growing as self-reliant in manufacture and production of many indigenous goods/scientific equipments. The globe is feeling the upsurge of Bharat again. It is the time to think who we are and what we are. The society must be aware of its continual intellect and cultural treasure to work hard to rejuvenate the glorious past. It is the time to reconsider and resurge the idea behind the Bhartiya philosophy, its real strength and identity and enthuse one and all borne on Bharat bhoomi with “Utho Singh Putron” for rejuvenating Bharat. This vibrant conference will provide an opportunity to discuss thoroughly the various aspects of glorious past and present upsurge of Bharat to rejuvenate the society.

## संगोष्ठी की भूमिका

भारत अनंत दार्शनिकता एवं गहन चिंतन की वह भूमि है जहां सभ्यता की प्रथम किरण आलोकित हुई । शाश्वत सत्य का प्राकट्य पूर्ण आलोकित रूप में स्वतःस्फूर्त हुआ एवं भारतीय विचारों का यह प्रवाह देश एवं काल की सीमाओं के पार वसुधा के राष्ट्रों को अक्षुण्ण आप्लावित कर रही है । प्राचीन भारत का विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, साहित्य एवं भाषा विज्ञान, कला एवं संस्कृति, नाट्य एवं संगीतकला, स्थापत्य कला, खनिज विज्ञान, आयुर्वेद एवं शल्यक्रिया, खगोल विज्ञान, योग एवं दर्शन शास्त्र की महान उपलब्धियों एवं अविष्कारों ने संपूर्ण विश्व में मानवता का पथ प्रदर्शित कर आत्म बोध कराया । दार्शनिकता एवं वैज्ञानिक विचारों के सतत् प्रवाह एवम् तेजस्विता को आकांताओं एवं औपनिवेशिक दासता के लम्बे काल खण्ड के अंधकार ने ढंक दिया । परन्तु जिस प्रकार अग्नि राख से परावृत होकर भी दीप्तिमान रहती है उसी प्रकार प्राचीन भारतीय चिंतन की ज्ञानाग्नि भारतीयों के अंतःकरण में सुप्त पड़ी हुई है और अब यह उचित समय है कि भारतीयों की सुप्त अतःज्ञान एवं चेतना का नवोन्मेष हो । स्वामी विवेकानन्द ने कठोपनिषद के शाश्वत मंत्र “उत्तिष्ठः जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत” का बारम्बार उल्लेख भारतीयों की प्रेरणा के लिए किया । इसी परिप्रेक्ष्य में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय और भारतीय शिक्षण मण्डल नवोन्मेष के विभिन्न पहलुओं पर मंथन के लिये तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन कर रहे हैं ।

यह भारतीय चिंतन ही था जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को एक इकाई के रूप में परिकल्पित किया एवम् सहअस्तित्व की भावना का प्रसार किया । भारतीयों की गहन विचारशीलता एवं मननशीलता ने वैश्विक परिवार की परिकल्पना ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’, लोकतंत्र की परिकल्पना ‘मुन्डे मुन्डे मतिर्भिन्नः’, सहअस्तित्व एवं सर्वकल्याण की परिकल्पना ‘सर्वे भवन्तुः सुखिनः’, सहयोग की परिकल्पना ‘सह वीर्यम् कर्वावहे’, विरस्थायी विकास की परिकल्पना ‘तेन त्यक्तेन भुविजथा’, सत्य सर्वोपरि की परिकल्पना ‘सत्य मेव जयते’, और पूरे विश्व में शांति एवं सद्भाव की परिकल्पना ‘अंतरिक्ष शांति औषधयो शांति’ एवं अनेकानेक उन्नत विचारों से मानवता का कल्याण किया । भारत की भूमि के महान दार्शनिक, वैज्ञानिक, विद्वान एवं चिकित्सक जो कि संत भी थे, ने सम्पूर्ण विश्व की मानवता को आलोकित किया । भारत विश्व के महानतम धर्मों की जननी है एवं अन्य सभी धर्मों के आदर्शों को प्रेरणा दी । भारत की महानता, दासता के लम्बे कालखण्ड से भारतीयों की अंतर्भूत विद्वता, जीवन शक्ति, सामाजिक सद्भाव एवं व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई ।

अनेकों बार आकांताओं के आक्रमण और विदेशियों द्वारा शासित होने पर भी, समृद्धि वैभव को खोने एवं विभाजन के बाद भी भारत एक ऐसा प्रबल राष्ट्र है जिसने उत्तरोत्तर प्रगति कर आत्मस्वामिमान को बनाये रखा है । स्वतंत्रता के बाद भारत ने महान उपलब्धियां अर्जित की है । यह विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र होने के साथ-साथ सबसे प्राचीन प्रवाहमान सभ्यता है । अनेकानेक विविधता के बावजूद भारत राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होकर एक समर्थ एवम् संगठित राष्ट्र के रूप में स्थापित है । भारतीय संस्कृति के मूल में ही वैज्ञानिक चेतना विद्यमान है और वर्तमान में भी विज्ञान एवं तकनीकी का अद्भुत विकास हुआ है । भारत परमाणु क्षमता युक्त विश्व की चौथी बड़ी सैन्य शक्ति है । हमने अंतरिक्ष में चन्द्रयान एवम् मंगलयान के साथ ही GSLV-MK III एवं एक साथ 104 उपग्रहों का PSLV द्वारा सफल प्रक्षेपण किया है । आज भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन गई है तथा खाद्यान्न में आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ निर्यात भी करता है । भारतीय सॉफ्टवेयर प्रतिभा ने पूरे विश्व को चमत्कृत कर दिया है । वर्तमान में हम विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों का निर्माण स्वदेशी तकनीक से कर रहे हैं । पूरा विश्व भारत के अभ्युदय को देख रहा है । यह उचित समय है कि हम आत्मचिंतन करे कि हम कौन हैं और क्या हैं ? भारतीय समाज को सतत् बौद्धिकता एवम् सांस्कृतिक विरासत का बोध होना चाहिये जिससे भारत की गौरवशाली वैभव को अथक पुरुषार्थ से पुनः प्रतिस्थापित कर सके । यह समय है जब भारतीय दर्शन एवम् अस्तित्व को पहचान कर सभी भारतीयों में ‘उठो सिंह पुत्रों’ के उद्घोष से उत्साह भर सकें । यह विशिष्ट सम्मेलन भारत के प्राचीन वैभव से वर्तमान अभ्युदय तक के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श कर नवोन्मेष का अवसर प्रदान करेगा ।

## Papers/Presentations are invited for the following sub-themes

### 1. भारतीय वैश्विक नेतृत्व

- भारतीय शिक्षा पद्धति
- भारतीय कला, समाज एवं संस्कृति
- भाषा एवं साहित्य
- वैश्विक वाणिज्य एवं व्यापार
- सर्वे भवन्तु सुखिनः

#### —Bhartiya Global Leadership

- Bhartiya Education System
- Bhartiya Arts, Society and Culture
- Language and Literature
- Global Trade and Commerce
- Universal Brotherhood

### 2. भारतीय ज्ञान परम्परा

- भारतीय धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म
- भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- भारतीय ब्रम्हांड विज्ञान एवं ज्योतिष
- योग एवं आयुर्वेद
- राज्य , न्याय एवं शासन व्यवस्था

#### — Bhartiya Knowledge Tradition

- Bhartiya Religion, Philosophy and Spiritualism
- Bhartiya Science and Technology
- Bhartiya Concept of Cosmology and Astrology
- Yoga and Ayurveda
- State, Justice and Governance

### 3. भारतीय जनजातीय संस्कृति एवं विकास

- भारतीय जनजातियां एवं विशेषताएं
- पारम्परिक ज्ञान एवं पद्धतियां
- भारतीय संस्कृति में जनजातियों का योगदान
- जनजाति एवं समाज : निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता
- जनजातीय विकास : छत्तीसगढ़ के संदर्भ में

#### — Bhartiya Tribal Culture and Development

- Bhartiya Tribal Community, Ethos and Ethnicity
- Traditional Knowledge and Practices
- Contribution of Tribes in Indian Culture
- Tribes and Society : Continuity and Change
- Tribal Development with Special Reference to Chhattisgarh

### 4. सतत् विकास की भारतीय अवधारणा

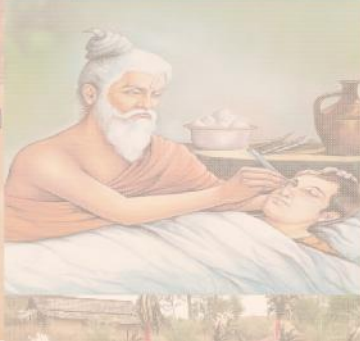
- प्राकृतिक संसाधन एवं ग्रामीण विकास
- प्रकृति – संस्कृति – विकास का अंतःसंबंध
- मातृरूपी प्रकृति
- भारतीय कृषि परम्परा
- पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन

#### — Bhartiya Concept of Sustainable Development

- Natural Resources and Rural Development
- Nature – Culture – Development Interdependency
- Nature as a Mother
- Bhartiya Agricultural Tradition
- Environmental Protection and Conservation

The Participant can present their research/Idea in any of the following format:

- Poster (size: 1 m x 1 m)
- Working or non-working model



## Objective of the conference

- To awaken the academicians, researchers and intellectuals on the glorious past of Bharat.
- To explore the great achievements, ideas and discoveries of Bharat retrospectively and prospectively.
- To rejuvenate the intellectuals and researchers towards new achievements, glory and success in all frontiers of knowledge.
- To evolve and rejuvenate various development paradigms based on Bharatiya spirit.

Important dates for submission of abstract and full paper :

**Last date of submission of abstract :** **31<sup>th</sup> August, 2017**

**Last date of submission of full paper :** **18<sup>th</sup> September, 2017**

**Note :** Abstract should not exceed 250 words. The abstract should be according to the template.

Please submit ABSTRACT of your idea through the link provided after log in your account. In case of query please contact at [support@ggvicbr2017.in](mailto:support@ggvicbr2017.in); [confbharatggv@gmail.com](mailto:confbharatggv@gmail.com). **Organising Secretary (M:9407730415)**

<b>Registration Details</b>	<b>upto 18 Sept., 2017</b>	<b>after 18 Sept., 2017</b>
Academicians	Rs. 1500.00	Rs. 2000.00
Research Scholar	Rs. 1000.00	Rs. 1200.00
Industrialist & Institutions	Rs. 5000.00	Rs. 6000.00
Foreign Delegate	\$ 200	\$ 250

Registration fee can be paid online at the conference website. The details will appear soon.

### **Accommodation Facility:**

Limited accommodation is available for participants on first come first serve basis.

For guideline please visit conference website at [www.ggu.ac.in](http://www.ggu.ac.in); [www.ggvicbr2017.in](http://www.ggvicbr2017.in)

## **Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University)**

**Koni, Bilaspur (Chhattisgarh) 495009 INDIA**

Ph: +91-7752-260283, +91-7752-260353, Fax : +91-7752-260148,

Email : [centraluniv@ggu.ac.in](mailto:centraluniv@ggu.ac.in), [ggv.regoffice@gmail.com](mailto:ggv.regoffice@gmail.com) Website : [www.ggu.ac.in](http://www.ggu.ac.in)

**Chief Patron**  
**Prof. Anjila Gupta**  
Vice-Chancellor, GGV, Bilaspur

**Dr. B. B. Kumar**  
Chairman, ICSSR, New Delhi

**Patrons**  
**Dr. Sachchidanand Joshi**  
Member Secretary, IGNSA, New Delhi

**Sri. K. G. Suresh**  
Director-General, IIMC, New-Delhi

**Convener**  
Prof. B.N. Tiwary  
Registrar (Acting), GGV

**Co-Convener**  
Dr. Arvind D. Joshi  
Registrar, KKSU, Nagpur

**Academic Coordinator**  
Prof. V. S. Rathore  
Dean, SoMC & Law, GGV

**Organising Secretary**  
Dr. M. N. Tripathi  
DSW, GGV

**Co-Organ. Secretary**  
Dr. Dhananjay Sharma  
Scientist, IGKV, Raipur

Dr. S.S. Thakur

Dr. N. Panigrahi

**Members**

Dr. R.K. Pandey

Dr. Rajbhanu Patel

## Guru Ghasidas Vishwavidyalaya



**Guru Ghasidas Vishwavidyalaya** is one of the Central Universities (upgraded from the erstwhile state University) established in 2009, located in Bilaspur in the State of Chhattisgarh. The University is situated in a socially and economically challenged area, and is appropriately named to honor the great Satnami Saint Guru Ghasidas (born in the 17th century), who championed the cause of the downtrodden and waged a relentless struggle against all forms of social evils and injustice prevailing in the society. It covers almost the entire spectrum of the higher education requirements of the local people. The University has made significant mark in the area of higher education with extension of community development like Unnat Bharat Abhiyan, Skill Development Program with an aim to fulfill the desire of the society involving the youth.

## Bhartiya Shikshan Mandal



Bhartiya Shikshan Mandal is a thought movement aimed at evolving an integrated and holistic indigenous model of education. Mandal has developed five dimensional agenda-Research, Awareness, Orientation, Publication and Organisation, to fashion next generation for building a strong, self-reliant and enlightened Bharat. The stress of all the activities is to awaken the inherent spirit of Bharatiya people into developing a governance model which will facilitate accomplishment of the national mission of Bharat guiding humanity.

## About Bilaspur



'Nyaydhani' Bilaspur, located in the state of Chhattisgarh, is widely known as Rice Bowl of India. Bilaspur is situated on a ridge 860 ft above sea level on the banks of River Arpa, 111 Kms away from States capital Raipur. The place is known all over the world for its several different varieties of Mangoes, Saris, Aromatic Doobraj rice, Handloom woven Kosa Silk and also for its rich and diverse culture. The Bilaspur is well embraced by lush green forest, hilly areas in north and great ancient history. Historical 'Ratanpur' is famous for its Fort and Sidh peeth 'Mahamaya Temple'. The gate of this fort illustrates the three chief deities of the Hindus: Shiva, Vishnu and Brahma. The 10<sup>th</sup> and 11<sup>th</sup> century Pataleshwar Kedar temple is an archaeological site and the main attraction in 'Malhar' town. Another historical place 'Talagram' is famous for "Deorani-Jethani" temple and the unique statue of 'RudraShiva'. It is considered that 'Mundaka Upanishad' is inscribed in 'Madku Dweep', which is the source of National Motto of India "Satyameva Jayate".



## How to Reach Bilaspur

### Bilaspur by Air

The nearest Airport from Bilaspur is Swami Vivekanand Airport, Raipur, roughly three hour drive from Bilaspur. It is well connected with major cities like Bangalore, Bhopal, Ahmedabad, Nagpur, Chandigarh, Chennai, Hyderabad, Indore, Jaipur, Delhi, Kolkata and Mumbai.

### Bilaspur by Train

Bilaspur is on the main Mumbai-Kolkata Railway Line and there are many trains that connect Bilaspur to major cities of India such as Delhi, Mumbai, Pune, Bhopal, Indore, Chennai, Kolkata, Nagpur, Puri, Amritsar, Ahmedabad, and Vishakapatnam etc. Bilaspur is the head quarter of South East Central Railway (SECR) zone in India.

### Bilaspur by Bus

Bilaspur is well connected by road from the important cities of the country.